IFAD
Investing in rural people

JTDS

PRADAN DEVELOPMENT SERVICES

## फसल का नाम: Jackfruit (*Artocarpus heterophyllus. L.*)

- कटहल झारखण्ड में हर घर में जाना पहचाना नाम है।
- इसके कच्चे फल को सब्जी बना कर और पके फल को भी खाया जाता है।
- इसकी बाज़ार में हमेशा अच्छी मांग बनी रहती है इसलिए इसे व्यावसायिक तौर पर भी खेती की जाती है।
- झारखण्ड की मिट्टी एवं वातावरण कटहल के लिए अनुकूल है।

### पौधे को लगाने का सही समय

- ✓ फल आने में लगने वाले समय को कम करने के लिए प्रायः कलम किया हुआ (grafted) पौधा लगाना चाहिए।
- ✓ दो वर्ष पुराने कलम किए हुए पौधे को ही लगाना चाहिए।
- ✓ जून से अगस्त महीने के दौरान पौधे की रोपाई सबसे सुरक्षित होती है। लेकिन सिचाई की व्यवस्था होने पर दूसरे महीनों में भी लगाई जाती है, इसके लिए अतिरिक्त देखरेख की जरूरत होती है।

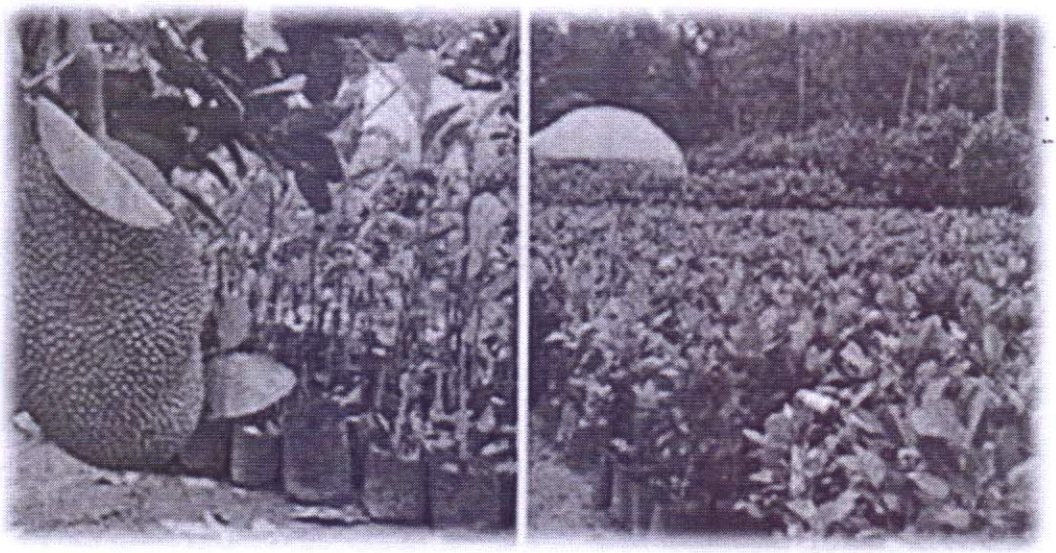

**जमीन के प्रकार**

झारखण्ड के टांड एवं बारी जमीन जिसमें हलकी ढलान हो उसे कटहल के लिए उचित माना जाता है।

**उन्नत किस्में**

दो तरह की कटहल के फल पाए जाते हैं - सख्त गुदे वाले और नरम गुदे वाले। प्रायः नरम गुदे वाले फल ज्यादा मीठे होते हैं।
देश में उगाई जाने वाली उन्नत किस्में

## 1. Singapore or Celon Jackfruit –

- ✓ यह कटहल श्रीलंका द्वारा विकसित है किस्म है, इसके फल मध्यम आकार के होते हैं जो 7 से 10 किलो तक के होते हैं।
- ✓ इस किस्म में पौधे के लगाने के 3 साल बाद ही फल आने लगते हैं।
- ✓ इस पौधे में फल साल में दो बार आते हैं एक मार्च से जून के दौरान और दूसरी बार सितम्बर से दिसम्बर के समय।

## 2. Hybrid jack –

- ✓ यह किस्म दो अलग प्रजाति के मेल से विकसित किया गया है। (Singapore jack और Veliappala)
- ✓ इस किस्म में पौधे के लगाने के 3 साल बाद ही फल आने लगते हैं।

## 3. PLR – 1 / Palur-1 –

- ✓ यह किस्म अत्यधिक उपज के लिए जाना जाता है। इसके एक पौधे में 60 से 80 तक फल लगते हैं।
- ✓ इस पौधे में फल साल में दो बार आते हैं एक मार्च से जून के दौरान और दूसरी बार सितम्बर से दिसम्बर के समय।
- ✓ इस किस्म के फल का आकार भी बड़ा होता है जो १२ किलो से ज्यादा तक होता है।

## 4. PPI – 1/ Pechiparai -1 –

- ✓ इस किस्म में फल पूरे ताने पर लगते हैं।
- ✓ एक समय पर 100 से अधिक फल लगते हैं।
- ✓ इस पौधे में फल साल में दो बार आते हैं एक मार्च से जून के दौरान और दूसरी बार सितम्बर से दिसम्बर के समय।
- ✓ इसे व्यावसायिक महत्व की प्रजाति कही जाती है।

**जमीन की तैयारी**

- 1 मी X1 मी X1 मी के आकार के गड्ढे को 9 से 10 मी की दुरी पर बनान चाहिए।
- प्रति गड्ढे में 10 किलो गोबर खाद मिलाकर भरना चाहिए।
- पौधे को लगाने से पहले गड्ढे को अच्छी तरह से सिंचित करके पौधे को लगाना चाहिए।

## पौधे को तैयार करना, सिचाई, और कोड़ा आदि :

- कटहल के पौधे को एक तना वाला बनाना चाहिए। इसके लिए डेढ से दो मीटर तक के शाखा को हटा देना चाहिए।

खाद आदि की विवरणी (प्रति पौधे के लिए किलो में ) -

| | पौधा लगाने के एक साल बाद | वार्षिक बढ़त | 5 वर्ष के बाद |
|---|---|---|---|
| जैविक खाद | 10 kg | 10 kg | 50 kg |
| नाइट्रोजन N | 0.150 kg | 0.150 kg | 0.750 kg |
| फोस्फोरस P | 0.080 kg | 0.080 kg | 0.400 kg |
| पोटास K | 0.100 kg | 0.100 kg | 0.500 kg |

सिचाई :

- इस की खेती वर्षा आधारित की जाती है लेकिन सिचाई व्यवस्था होने पर अधिक फल आदि ली जाती है।
- पौधे में फल और फूल लगने के समय सिचाई बहुत कारगर होती है।

कोड़ा आदि :

- शुरुआती सालों में पौधों के बीच दलहन आदि फसल लेन फायदेमंद होता है।
- जैसे-जैसे पौधे की वृद्धि होती है इसका ध्यान ज्यादा रखना होता है जब तक की फूल और फल के आने के उम्र का नहीं हो जाये।

किट प्रबंधन

1. बड वीविल (**Bud weevil**) (*Ochyromera artocarpi*): यह नाजुक कली, शाखा एवं फलों को छेद कर नुकशान नुकशान पहुंचाते हैं।

   **नियंत्रण :** गिरे हुआ फलों को जमा कर उसमें विकसित कीटों को मार देना चाहिये। और Endosulfan (0.035%) का उपयोग करना चाहिए।

2. फल मक्खी (**Fruit fly**) (*Gitona distigmata*): यह सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचाने वालों में से एक है।

3. कांटेदार पिल्लू (**Spiked caterpillar**) (*Spilosoma sp* or *Spodoptera 5auritia*) यह पौधे के छाल को कहते हैं।

   **नियंत्रण :** इन दोनों को नियंत्रित करने के लिए अंतर प्रवाही (systemic) कीटनाशक का प्रयोग करना उचित होता है।

4. फल का सड़ना (**Fruit rot**) (*Rhizopus artocarpi*): इसके कारण अपरिपक्व फल गिर जाते हैं जिससे भरी नुकसान होता है। यह प्रायः अत्यधिक नमी के कारण होता है।

   **नियंत्रण :** Di-ethane M- 45 (0.2% or Bavistin (0.05%) को फल के विकास के समय 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए।

फलन आदि

प्रायः कलमी पौधे 4 से 5 वें साल में फल देने लगते हैं। कुछ किस्में तीसरे वर्ष से ही फल देने लगते हैं। एक पौधे में 20 से 100 तक फल लगते हैं। एक-एक तैयार फल 10 से 30 किलो तक के होते हैं।